



श्री साईं से एक विनती  
-a sai lover





~JAY SAI RAM~



# साई बाबा स्तुति

साई बाबा परम गुरु हैं।

जय जय जय साई महाराज हे जगदीश

हे जगत को धारण करने वाले जीवों के परम आधार हे  
स्वयमप्रकाश भक्त रक्षक प्रभो !!! हमारी रक्षा करो रक्षा करो  
रक्षा करो, आपके अलावा हमें किसी का आश्रय नहीं, इस  
मायिक जगत में हम नित्य आपके प्रेम रस की वर्षा की राह  
देखते हैं, स्वामी हमें दर्शन दो आपके स्पर्शमात्र से कारण देह  
भस्म हो जाएगी और हमारे जन्म जन्म के बंधन कट जायेंगे  
गुरु सरकार हमारा विश्वास हैं नाथ आप अकारण करुण हैं  
इसके नित नये प्रमाण मुझे आपके प्रेम में मिलते हैं आपमें  
निष्ठा ही हमारी पूँजी है

हमारा मन कितनी ही सांसारिक कामनाओं से भरा हुआ था,  
न जाने कितने जन्म लेकर हम मानव देह प्राप्त कर पृथ्वी पर  
आये परन्तु जीवन व्यर्थ ही गवाया अनित्य वस्तुओं के भोग  
विलास में ये जीवन जा रहा था की आपने मुझे चुन लिया,  
अगर कहूँ की ये मेरे पुण्य थे जो मुझे सद्गुरु मिले तो अत्यंत  
मुखर्ता होगी प्रभु एक तुच्छ चीटी भी क्या सूर्य को पकड़  
सकती है आप अपनी स्वयं की कृपा से ही मिलते हो गुरुदेव।  
आपने जीवन का अर्थ और कारण बताया है भगवन आपसा  
कृपालु कौन हैं।।।



मै शपथ खाकर कहता हूँ सबसे सुंदर पवित्र प्रेममयी सम्बन्ध गुरु और शिष्य का ही है, गुरु शिष्य के असंख्य अपराध क्षमा करते हैं और उसे अपने हृदय से लगा लेते हैं ऐसी करुणा किस मालिक में होगी की जो सेवक को स्वयं ही बना दे, गुरु शिष्य को स्वयं ही बनाकर उसका जीवन सार्थक करते हैं

हे मायापति आपकी माया बड़ी प्रबल है, इसने मनुष्यों को खूब नचाया है और ये हमें बार बार आकर्षित करने का प्रयत्न करती हैं हैं परम पुरुष मेरे हृदय में आप अपना दंड लेकर वास करें, आपके भय से यह कामनाओं का जंजाल कभी नहीं पनपेगा, भक्तवत्सल प्रभु आप अपने भक्तों के लिए सदैव तत्पर रहते हैं आपका स्वाभाव जिसने जान लिया वह कभी भूलकर भी संसार में नहीं फसता आपके भक्तों को संसार नहीं सुहाता मेरे साईं

परन्तु मै तो इस पृथ्वी पर भार स्वरूप ही हूँ प्राणनाथ ये दसों दिशाएँ मुझे धिक्कारती होंगी क्यूँ की मेने आपका इतना प्रेम और करुणा पाकर भी प्रत्येक श्वास में आपका भजन नहीं किया गुरुराज मेरे पापों का ये ही प्रमाण है की मुझे अभी तक आपका दर्शन प्राप्त नहीं हुआ, मुझे तो नर्क में भी जगह नहीं मिलती इतनी कृतघ्नता के साथ परन्तु आपने कृपा कर मुझे मुक्ति का अधिकारी बना दिया, आपका ये प्रेम अद्वितीय है बाबा इसका स्मरण मात्र भी मुझे आनन्द और प्रेम से भर देता है।

आपका नाम बहुत ही प्यारा है हमें विश्वास है गुरुदेव आपका नाम लेकर हम भवसागर से पार हो जायेंगे नाथ और हम



आपके दिव्य धाम में आपकी नित्य सेवा करेंगे

जन्मों जन्मों से संचित पाप और अज्ञान की निवृत्ति हो जाये  
जो आप मेरे हृदय में वास करे हे ज्ञानेश्वर, हम तो देह को ही "  
मै "मान बैठे हैं भगवन आप हमे स्वयं तत्व की प्राप्ति कराये  
प्रभो जिस परमानन्द को परमहंस शुकदेव जी ने पाया जिस  
आत्मतत्व की प्राप्ति जड़ भरत को हुई वह स्वयं के स्वरूप की  
स्थिति कृपा कर हमे भी दीजिये नाथ, अब हमे माया से कोई  
प्रयोजन नहीं है। हमे भी अपना शाश्वत आनन्द दीजिये हे  
सत्चित्दानंद साई ! सभी विषय भुलाकर आपकी भक्ति ही  
मेरा एकमात्र प्रयोजन रहे

मन में कुतर्क और कुसंशय रुपी प्रेत कभी न उपजे नाथ  
आपकी करुणा पर मुझे बहुत विश्वास हो गया है  
करुणानिधान आपकी करुणा का स्मरण करके मेरा संयम टूट  
जाता है, अगर आप अपनी शक्ति से हमारी बुद्धि को अपनी  
समस्त करुणा का ज्ञान करवादो तो शायद कुछ क्षणों में ही  
मेरी बुद्धि हृदय सब पिघल जाये, आपका हृदय नवनीत  
समान तुलसीदास ने कहा था परन्तु फिर उन्हें भी अपनी बात  
में त्रुटी लगी क्यू की मक्खन तो अपने ताप से पिघलता है  
परन्तु सद्गुरु का हृदय तो अपने शिष्य के ताप को देखकर  
पिघल जाता है ।

करुणा कर आपने मुझे अपनी प्रेममयी भक्ति दी है गुरुराया  
अपने हमे अभयदान दिया है आपकी इस करुणा का सदैव  
स्मरण रहे

द्वैत का अनुभव ही एक दुःख का कारण है नाथ जिस अद्वैत



को पाने के लिय योगी और ग्यानी तप करते हैं कृपा क्र हमे  
भी उसकी अनुभूति कराये नाथ

गुरु प्रेम बंधन में बाँध देते हैं,

ऐसे बंधन पर तो करोडो मुक्ति न्योछावर हे नाथ

साई बाबा आप अपने शिष्यों लो नीति नियम के बन्धनों में  
नही बांधते, आप तो मुक्ति दाता हो हे तारनहार आपने हमे श्री  
हरी की अत्यंत अनमोल प्रीती देकर हमे तृप्त किया हैं नाथ  
आपके प्रेम रस में डूबे हुए हम कभी भूल से भी माया से  
आकर्षित हो जाते तो हे अच्युत आप हमे अपनी गोद में लेकर  
प्रेम भरी शिक्षा देते और जो माया की मिथ्यात्व का विस्मरण  
हुआ उसेका बोध कराते हो। आपने सदैव हमारा योगक्षेम  
वहन किया हैं भरतार

अब कुछ ऐसी कृपा अपने इस क्षुद्र बालक पर कीजिये की  
इसका द्वैत नष्ट हो जाये नाथ यद्यपि गुरु से अद्वैत की इच्छा  
नही करनी चाहिए परन्तु फिर भी आपने अपने इस चाकर को  
संसारिक व्याधियो को खत्म करने वाला परमानन्द प्रदाता  
अद्वैत का ज्ञान दिया नाथ अब बोध होने की देर हैं की जो  
संकल्प मात्र से करोडो ब्रह्माण्ड निर्मित कर विध्वंस कर  
सकते हैं जिनके ऐश्वर्य का पार नही पाया जा सकता ऐसे श्री  
कान्त हमारे स्वामी श्री साई हैं जिनकी महिमा गाने का  
दुस्साहस ये किंकर कर रहा हैं

आप ही भक्तो के परम हितेषी और सुहृद हैं हे समर्थ जिसने  
एक बार आपका परम पवित्र और प्रेमभरा स्वरूप जी भरकर  
देखलिया फिर उसे कभी संसार के मॉल मूत्र भरे देह से प्रीटी



नहीं हो सकती आपकी छवि विदेह करने वाली हैं।

इस संसार में बड़ा अज्ञान व्याप्त हैं प्रभु किन्तु अपने हमें  
भक्ति का मर्म बतलाया हैं जिसे आपके परम भक्त एकनाथ  
और ज्ञानेश्वर महाराज ने पाया था अब कृपा कर उनके जैसी  
गुरु भक्ति देकर हमें धन्य कीजिये बाबा।

आपकी पावन शिर्डी ही हमारा प्रिय स्थल हैं दयानिधे अब  
तीर्थ का अर्थ मेरे लिये शिर्डी और भगवन का अर्थ साई हो  
गया हैं अपने अपना अमृतमयी प्रेम देकर हमारा चित्त हर  
लिया हैं।

हम तो आपको पाकर ही सनाथ हुए हैं बाबा। ये जिह्वा केवल  
आपके गुण गाने के लिये हैं, उदर आपका प्रसाद पाने को, नेत्र  
आपके दर्शन के लिये, ओष्ठ आपके चरणकमलों को चुम्बन  
देने के लिये, नासिक आपके लिये उत्तम चन्दन चुनने के लिये,  
श्रवणपुट आपके गुणानुवाद सुनने के लिये ही हैं बाबा, हाथ  
आपकी चाकरी के लिये, पग आपके लिये फूल लेकर आने के  
लिये और बुद्धि आपको अर्पण करने के लिये ही हैं प्राणनाथ।

आपको कोटि कोटि प्रणाम प्रभु आपको कोटि कोटि  
धन्यवाद।।।